मूं जेहेवा अजाण अबूझ दुष्ट होय अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन।। १६ ।।

मेरे जैसे अनजान, नासमझ, दुष्ट, मूढ़, नीच और बुद्धिहीन आपके इन चरणों की कृपा से ज्ञानी, होशियार, बुद्धिमान, सुबुद्धि और चतुर बन जाते हैं।

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास।
ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास।। १७ ।।

ऐसे जीवों को जागृत करके, अखण्ड ज्ञान देकर आत्मा की पहचान कराते हो। जिससे वह जीव चतुर और बलवान होकर चौदह लोकों में प्रकाश करते हैं।

हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आवार।
आणी जोगवाई ए न केहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार।। १८ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने इस बार जो कृपा की है, उन गुणों का मैं कहां तक बखान करूं? इस मनुष्य तन से उनका बखान नहीं होता है, परन्तु लिखना तो निश्चित ही है।

हवे आहीं उपमा केही दऊं मारा वालैया, ए सब्द न पोहोंचे तमने।
वचन कहूं ते ओरूं रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने।। १९ ।।

हे वालाजी! अब इसके ऊपर आपकी शोभा का क्या वर्णन करूं। मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते और जो कहती हूं वह यहीं रह जाते हैं इसलिए मुझे अत्यन्त दुःख होता है।

एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहूं छूं धणी श्री धाम।
एक एणे वचने मारो जीव करास्यो, भाजी हैडानी हाम।। २० ।।

मेरे एक वचन "धाम के धनी" कहने में जीव की आग बुझ जाती है, जीव को शान्ति मिलती है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास।
विगते वाट देखाडूं घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि इस ब्रह्माण्ड को फोड़ (पार) कर अच्छी तरह घर का रास्ता बताऊं जिससे मेरा सुन्दरसाथ आसानी से आ जाए।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ५७९ ।।

नोट : यह शोभा चाकला मन्दिर की है जो ऊपर लिखी गई है। आज यह गांगजी भाई के परिवार में सम्पत्ति बंटवारे के कारण आकार में छोटा हो गया है। इस चाकला मन्दिर में ही वह आंगन था, वृक्ष था, सामान था, जिसकी महिमा का वर्णन इस प्रकरण में है और कई ऐतिहासिक पुरानी वस्तुएं आज इसी चाकला मन्दिर में हैं। स्वामीजी जब हबसा में विराजमान थे, वहां वाणी उतरी। उस समय कोई और स्थान अपना नहीं था (और किसी स्थान का वाणी में वर्णन नहीं है)।

हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहूं।
एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुन्दरबाईए दिध।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी इस स्तुति के बाद (जो ऊपर के प्रकरण में वर्णित है वही स्तुति है) विनती करती हैं कि हे धनी! आपके चरण जीव के नेत्रों में सदा रखूं। इन चरणों से मेरे सब कार्य सिद्ध हुए हैं। पहली निधि (तारतम ज्ञान) श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने दिया है।

Nijanand App

ए बंने सरूपमां जोतज एक, ते में जोयूं करी विवेक।
इंद्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मूने तारतम थकी।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों में (श्री राजजी का आवेश स्वरूप और श्यामाजी की आतम) एक ही तेज है। इसको मैंने विवेक से विचार कर देखा। श्री इन्द्रावतीजी विनती करती हैं कि हे श्री राज श्यामाजी! आपने यह न्यामत (कुलजम स्वरूप की वाणी) तारतम से दी है।

मारो आसरो कांई न हतो मारा धणी, पण मूने बंने सरूपे दया कीधी घणी।
सेवा मां हूं न हती सरीख, नव जाणूं मूने निध दीधी केम करीस।। ३ ।।

हे मेरे धनी ! मेरा कोई सहारा नहीं था, परन्तु मेरे ऊपर आप दोनों स्वरूपों ने कृपा की है। मैं तो सेवा में भी शामिल न थी। पता नहीं, इन दोनों स्वरूपों ने मुझे किस प्रकार से यह न्यामत बख्शी।

क्रतव चितवणी जे सेवा करे, अवला गुण मोहजल परहरे।
ते पण मनसा वाचा करमणा करी, अने दोड करे घणूं वालपण धरी।। ४ ।।

अपना कर्तव्य समझ कर जो सेवा और चितवनी करते हैं, मोहजल की तरफ खींचने वाले उलटे गुणों को छोड़ते हैं, वह मन, वचन और कर्म से बड़े प्यार से आकर मिलते हैं।

पण जिहां लगे दया तमारी नव थाय, तिहां लगे सर्व तणाणूं जाय।
ते पारखूं में जोयुं निरधार, साथ सकलना वचन विचार।। ५ ।।

परन्तु जब तक आपकी कृपा नहीं होती, तब तक यह सब बेकार जाता है। इस बात को मैंने दृढ़ता से जांचकर देखा और परखा और सुन्दरसाथ के वचनों पर भी विचार कर देखा।

जे खरो थई जीव जुओ मन करे, कपट रत्ती रदे नव धरे।
एम थैने जे तमने सेवे, अने वचन विचारी तमारा ग्रहे।। ६ ।।

जो जीव सच्चे मन से देखे और हृदय में तनिक भी कपट न रखे, ऐसा बनकर जो आपकी सेवा करे और आपके वचनों को विचार कर ग्रहण करे।

साचो सनकूल करे जे तमारो चित, अने भ्रांत मेली करे जीवने हित।
चित ऊपर खरो चालसे जेह, सोभा घेर साथमां लेसे तेह।। ७ ।।

जो आपके चित्त को सच्चाई से प्रसन्न करे और संशय मिटाकर जीव का हित करे और आपके चाहे अनुसार सच्ची रहनी में आवे, उस सुन्दरसाथ को परमधाम में सबके बीच शोभा मिलेगी।

ए निद्रा उडाडीने कह्या वचन, श्री धाम धणी जीव जाणी मन।
वली जां जोऊं तमने जोपे करी, तां हजीमें निद्रा नथी मूकी परहरी।। ८ ।।

यह वचन मैंने नींद हटाकर (जागृत होकर) कहे। धाम के धनी को अपने जीव और मन से पहचाना है। फिर जब आपकी तरफ देखती हूं तो लगता है कि मैंने अभी भी निद्रा को नहीं छोड़ा।

आ वचन कह्या में निद्रा मंझार, जां जोपे करी जोऊं मारा जीवना आधार।
नहीं तो एह वचन केम कहूं मारा धणी, पण कांईक तासीर दीसे अस्थानक तणी।। ९ ।।

अपने जीव के जीवन (श्री राजजी महाराज) को अच्छी तरह से देखती हूं तो लगता है कि यह वचन भी मैंने नींद में कहे हैं। नहीं तो, हे मेरे धनी ! ऐसा मैं कैसे कह सकती थी। यह तो इस स्थान का असर है।

Nijanand App

वली जोऊं ज्यारे घरनी दिस तमने, त्यारे वली एम थाय अमने।
आ धामनां धणी ने में किहा कह्या वचन, त्यारे जीव विचारी दुख पामें मन।। १० ।।

हे धनी! फिर जब मैं घर (परमधाम) की तरफ देखती हूं तो फिर मुझे ऐसा लगता है कि यह वचन मैंने धाम के धनी को कहे हैं, तब जीव मन में विचार कर दुःखी होता है।

पण केम कहूं सब्द न पोहोंचे तमने, मारी जिभ्या थई माया अंगने।
वाला तमे थया छो सब्दातीत, मारी माया देह ऊभी सरीख।। ११ ।।

पर कैसे कहूं मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते। मेरी जबान माया के अंग की है। हे वालाजी ! आप शब्दातीत हो और मेरा तन माया का है।

धणी लगतां वचन कहीस आवी धाम, त्यारे भाजीस मारा जीवनी हाम।
आ तां वचन में साथ माटे कह्या, ए वचन जोई साथ मूकसे माया।। १२ ।।

आपको आने वाले ज्ञान को कहकर ही मैं घर आऊंगी और तब मैं अपने जीव की चाहना मिटाऊंगी। यह वचन तो मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कहे हैं। वह इन वचनों को देखकर माया को छोड़ेंगे।

इंद्रावती कहे साथ ने तेडो तत्काल, ए माया कठण छे नितालं।
आ दुस्तर मांहें दुख देखे घणुं, नव ओलखाय कांई आपोपणुं।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथ को तुरन्त बुलाओ। यह माया बड़ी प्रचण्ड है, अथाह है, कठिन है। इस कठिन माया में यह बहुत दुःख देख रहे हैं। इन्हें अपने आपकी पहचान नहीं हो पा रही है।

में तां ए लवो कह्यो मायाने सनमंध, हूं देखीती नव देखूं अंध।
एम कहिए तेने जे नव लिए सार, तमे ततखिण खबर लेओ छो आधार।। १४ ।।

मैंने तो माया की हकीकत देखकर थोड़े शब्दों में कहा है। मैं देखती हुई भी माया के रूप का वर्णन नहीं कर सकती। यह तो उसे कहा जाए जिसको खबर न हो। आप तो तुरन्त हमारी खबर लेते हो।

ते माटे वचन कह्या में एह, रखे अधखिण साथ विसारो तेह।
अधखिण रखे तमारी थाय, तो तेहेमां कै कलपांत वही जाय।। १५ ।।

हे धनी! इस वास्ते मैंने इन वचनों को कहा है कि आप आधे क्षण के लिए भी सुन्दरसाथ को मत भुलाओ। यह आधा क्षण कहीं आपका (परमधाम का) न होवे, जिसमें यहां के (इस माया के) कल्पान्त के कल्पान्त बीत जाते हैं।

मारा धणी हूं तो कहूं जो तमे अलगा हो,एक पाव पल अमारो विछोडो न सहो।
में एम तां कह्युं जो मारी ओछी मत, तमे अम माटे केटला करो छो खप।। १६ ।।

हे धनी ! मैं इसलिए कहती हूं कि आप हमसे अलग होकर एक चौथाई पल का भी वियोग सहन नहीं करते। मैं अपनी ओछी बुद्धि से कहती हूं। आप तो हमारे वास्ते बहुत मेहनत करते हो।

तमे आंही आव्या अम माटे देह धरी, दया अम ऊपर अति घणी करी।
तमे सामा आव्या आगल अम माट, लई आव्या तारतम देखाडी घर वाट।। १७ ।।

आप हमारे वास्ते यहां देह धारण करके आए और हमारे ऊपर बहुत कृपा की। आप हमारे लिए हमारे सामने हमसे पहले तारतम लेकर आए और घर (परमधाम) का रास्ता दिखाया।

Nijanand App

साथे माया मांगी ते थई अति जोर, तमे साद कीधां घणा करी बकोर।
पण केमे न वली अमने सुध, त्यारे व्रह देवा सरूपजी अद्रष्ट किध।। १८ ।।

सुन्दरसाथ ने जो माया मांगी थी वह जोरदार हो गई। आपने पुकार-पुकारकर घर की याद दिलाई, परन्तु हमें फिर भी सुध नहीं आई, तब विरह देने के लिए आपने तन छोड़ा।

पण तोहे न वली अमने सार, त्यारे वली बीजो देह धर्यो तत्काल।
ततखिण आवी अम भेला थया, वली वचन सागरना पूर ल्यावया।। १९ ।।

परन्तु फिर भी हमें खबर नहीं हुई, तो फिर आपने तुरन्त दूसरा तन धारण किया (इन्द्रावती के तन में आए)। उसी पल आकर आप हमको मिले और सागर के समान प्रवाह का प्रवाह यह वाणी (कुलजम सरूप) लाए।

में साथने कह्यूं ते केम तमने केहेवाय, कहिए तेहेने जे अलगां थाय।
एटलूं घणुए हूं जाणूं सही, ए वचन धणीने केहेवाय नहीं।। २० ।।

मैं सुन्दरसाथ से जो कहती हूं उसे आपसे कैसे कहा जाय? कहा तो उससे जाता है जो अलग रहता है। यह मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि यह वचन धनी के लिए नहीं कहे जाते।

मारा मन मांहें एम आवी थयूं, साथ रखे जाणे अम माटे कां नव कह्यूं।
जो एम न कहूं तो खबर केम पडे, जे धणी साथ ऊपर दया एम करे।। २१ ।।

मेरे मन में ऐसा आया कि सुन्दरसाथ ऐसा न समझ बैठे कि हमारे लिए कुछ नहीं कहा। यदि ऐसा न कहूं तो सुन्दरसाथ को कैसे खबर मिले कि धनी हमारे ऊपर दया करते हैं।

साथने जणाववा माटे कह्या ए वचन, धणी तमारी दया हूं जाणूं जीवने मन।
साथ चरणे छे ते तां वचिखिण वीर, वली भले वचन विचारे द्रढ धीर।। २२ ।।

सुन्दरसाथ के समझने के लिए ही यह वचन कहे हैं। हे धनी! आपकी मेहर को तो मैं जीव और मन से अच्छी तरह जानती हूं। सुन्दरसाथ जो चरणों में हैं, वह बुद्धिमान (चतुर) हैं। वह इन वचनों पर अच्छी तरह दृढ़ता पूर्वक विचार करेंगे।

पण घणो खप करूं साथ पाछला माट, साथ जोई वचन आवसे आणी वाट।
साथ जोजो तमे दया धणीतणी, ए दयानी वातों छे अति घणी।। २३ ।।

परन्तु जो पीछे रह गए हैं उनके लिए यह प्रयत्न करती हूं। इन वचनों को देखकर पिछले सुन्दरसाथ (जो अभी नहीं जागे) इसी रास्ते पर आएंगे। हे सुन्दरसाथजी! तुम धनी की दया को देखो। यह कृपा की बात बहुत बड़ी है।

ए दयानी विध हूं जाणूं सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
जो जीवसूं वचन विचार सो प्रकास, तो ततखिण जीवने थासे अजवास।। २४ ।।

इस कृपा की हकीकत मैं जानती हूं, परन्तु इस जबान से कही नहीं जाती। अपने जीव से इन वचनों को (प्रकाश वाणी के) विचार कर देखो, तो ततखिन (तत्क्षण) जीव को उजाला हो जाएगा (पहचान हो जाएगी)।

Nijanand App

इंद्रावती सुन्दरबाईने चरणे, श्रीवालाजीनी सेवा करीस वालपण घणे।
सेवा जेहेवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचनज थकी।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों में लगकर कहती हैं कि वालाजी की सेवा बड़े प्यार से करूंगी। सेवा के समान और कोई वस्तु नहीं है। जो मन से विचार करके देखेगा, वही इसका लाभ लेगा।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ६०४ ॥

कत्तण जो द्रष्टांत

खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे जीव।
तोहे नी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां।। १ ।।

इस नींद को आग लग जाए जो अभी तक जीव को नहीं छोड़ती। अभी तक इसकी पहचान नहीं होती, इसलिए अपने ऊपर ऐसी बीत गई।

आंके निद्र उडाणके अदियूं मूजियूं, आंके डियां हिकमी साख।
अंईं अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ।। २ ।।

तुम्हारी नींद उड़ाने के लिए, हे मेरी बहन! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम पहले से ही इसको देखकर, हे साथजी! अपनी बड़ाई का ख्याल रखना।

आतण मंझे जे आवयो, जेडियूं हेरे मिडी।
किंनीनी कींझो कत्तयो, किन न भगी रे भींडी।। ३ ।।

सूत कातने के लिए आंगन में जितनी मिलकर जो सखियां आई हैं—उनमें किसी ने बारीक सूत काता और किसी ने तो रुई की पूनियों की बंधी गड्डी भी नहीं खोली।

कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे।
केहे केहे संनो कत्तयो, घणो नेह धरे।। ४ ।।

वह हंसते-हंसते सूत कातने के लिए आईं, किन्हीं-किन्हीं ने अधिक चित्त लगाकर बारीक सूत काता।

के बेठियूं मय विच थेई, पण नाडी तंद न चढे।
कत्तणके जे विसरयूं, से उथियूं ओराता धरे। ।५ ।।

कई अभिमान में बैठी हैं और तकले पर सूत नहीं चढ़ाया। जो यहां कातना भूल गईं, वह घर जाते समय पछताएंगी।

किंनी कतया सोहागजा, सूतर भरया सेर।
के बेठियूं मय विच थेई, पेर मथे चाडे पेर।। ६ ।।

कइयों ने पति को खुश करने के लिए सेर भर सूत कात डाला। कई पैर पर पैर चढ़ाकर सबके बीच बैठी रहीं।

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर।
के नारींदयू भूं अडूं, के मथे चढयूं सिर मेर।। ७ ।।

कइयों ने तकले पर ऐसा समय पाकर जल्दी से सूत चढ़ाया, कई धरती की तरफ देख रही हैं। कई पहाड़ों की भांति सिर ऊपर कर बैठी हैं (अहंकार में)।

Nijanand App